E Content for students of Patliputra University

B.A(Hons),Part-1, Paper 1

Subject- Philosophy

Title/Heading of Topic-"वैशेषिक दर्शन में अभाव (Non Existence) पदार्थ"

---डॉ. राज नारायण सिंह सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

अभाव वैशेषिक दर्शन का सातवां पदार्थ है। अन्य छः पदार्थ भाव-पदार्थ हैं जबकि यह पदार्थ अभावात्मक है। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय निरपेक्ष पदार्थ हैं जबकि अभाव पदार्थ सापेक्षता के विचार पर आधारित है। अभाव किसी वस्तु का न होना कहा जाता है। अभाव का अर्थ किसी वस्तु का किसी विशेष काल में किसी विशेष स्थान में अनुपस्थिति है । अभाव शून्य से भिन्न है। अभाव को शून्य समझना भ्रामक है।

वैशेषिक-दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद ने अभाव का उल्लेख नहीं किया है। परन्तु वैशेषिक सूत्र में अभाव को प्रमेय के रुप में माना गया है। प्रशस्तपाद ने वैशेषिक - सुत का भाष्य लिखते समय अभाव का विस्तृत वर्णन किया है। इसी कारण बाद में अभाव को भी एक पदार्थ के रुप में जोड़ दिया गया है। अत: अभाव को वैशेषिक दर्शन का मौलिक पदार्थ नहीं कहा जा सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि वैशेषिक ने अभाव को एक स्वतन्त्र पदार्थ क्यों माना ? अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ मानने के निमित्त वैशेषिक-दर्शन में अनेक तर्कों का उल्लेख है।

(१) अभाव का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता है। जब राति के समय आकाश की ओर देखते हैं तब वहाँ सूर्य का अभाव पाते हैं। सूर्य का आकाश में न रहना रात्रि-काल में उतना ही वास्तविक है जितना रात्रि काल में चन्द्रमा और तारों का रहना। इस प्रकार अभाव की सत्ता को अस्वीकार करना भ्रामक है। इसीलिये वैशेषिक ने अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ माना है।

(२) अभाव को पदार्थ मानना पदार्थ के शाब्दिक अर्थ से भी प्रमाणित है । पदार्थ (पद+अर्थ) उसे कहा जाता है जिसे हम शब्दों के द्वारा व्यक्त कर सकें। अभाव को शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाता है। उदाहरण स्वरूप क्लास में हम हाथी का अभाव पाते हैं। इस अभाव को शब्दों के द्वारा प्रकाशित किया जा सकता है। अत: अभाव को एक अलग पदार्थ मानना संगत है।

(३) अभाव को मानना आवश्यक है। यदि अभाव को नहीं माना जाय तो संसार की सभी वस्तुएँ नित्य हो जायेंगी। वस्तुओं का नाश असम्भव हो जायेगा। वैशेषिक दर्शन अनित्य वस्तुओं की सत्ता में विश्वास करता है। पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के कार्य-द्रव्य, जो परमाणु के संयुक्त होने से बनते हैं, अनित्य हैं, ऐसी अनित्य वस्तुओं की व्याख्या के लिए वैशेषिक ने अभाव को अपनाया है। अभाव के बिना परिवर्तन और वस्तुओं की अनित्यता की व्याख्या करना असम्भव है।

(४) वैशेषिक-दर्शन में अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना गया है, क्योंकि वैशेषिक बाह्य सम्बन्ध में विश्वास करता है। दो वस्तुओं के बीच सम्बन्ध का विकास होता है उसके पूर्व उन दो वस्तुओं के बीच सम्बन्ध का अभाव रहता है। उदाहरणस्वरूप, वृक्ष और पक्षी के संयुक्त होने से एक सम्बन्ध होता है। इस सम्बन्ध के होने के पूर्व वृक्ष और पक्षी के बीच सम्बन्ध का अभाव मानना आवश्यक है। जो दार्शनिक बाह्य सम्बन्ध में विश्वास करता है उसे किसी-न- किसी रुप में अभाव को भी मान्यता देनी पड़ती है। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है "जब हम किसी वस्तु के सम्बन्ध में विचार करते हैं तब वस्तु के भावात्मक पक्ष पर बल दिया

जाता है और जब हम एक सम्बन्ध की बात करते हैं तो वस्तु के अभावात्मक पक्ष पर बल दिया जाता है।"

(५) वैशेषिक का मोक्ष-सम्बन्धी विचार भी अभाव को प्रामाणिकता प्रदान करता है। मोक्ष का अर्थ दु:खों का पूर्ण अभाव कहा जाता है। मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना जाता है। यदि अभाव को नहीं माना जाए तो वैशेषिक का मोक्ष-विचार काल्पनिक होगा।

अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ क्यों माना गया, इसकी व्याख्या हो जाने के बाद अभाव के प्रकार की व्याख्या करना आवश्यक है।

अभाव दो प्रकार का माना जाता है। वे दो प्रकार के अभाव हैं-

(१) संसर्गाभाव (Non-existence of correlation)

(२) अन्योन्याभाव (Mutual Non-existence)

संसर्गाभाव दो वस्तुओं के सम्बन्ध के अभाव को कहा जाता है। जब एक वस्तु का दूसरी वस्तु में अभाव होता है तो उस अभाव को संसर्गाभाव कहा जाता है। इस अभाव का उदाहरण है 'जल में अग्नि का अभाव', 'वायु में गन्ध का अभाव'। इस अभाव को सांकेतिक रुप में 'क' का 'ख' में अभाव कहकर प्रकाशित कर सकते हैं। इस अभाव का विपरीत होगा दो वस्तुओं में संसर्ग का रहना। संसर्गाभाव तीन प्रकार का होता है-

(१) प्रागभाव (Prior Non-existence)

(२) ध्वंसाभाव (posterior Non-existence)

(३) अत्यन्ताभाव (absolute non-existence)

(१) प्रागभाव (Prior Non-existence)-उत्पत्ति के पूर्व कार्य का भौतिक कारण में जो अभाव रहता है उसे प्रागभाव कहा जाता है। निर्माण के पूर्व किसी चीज का अभाव रहना प्रागभाव कहा जाता है। एक कुम्हार मिट्टी से घड़े का निर्माण करता है।घडे के निर्मित होने के पूर्व मिट्टी में घड़े का अभाव रहता है। यही अभाव प्रागभाव है। यह अभाव अनादि है। मिट्टी में कब से घड़े का अभाव है यह बतलाना असम्भव है। परन्तु इस अभाव का अन्त सम्भव है। वस्तु के निर्मित हो जाने पर यह

अभाव नष्ट हो जाता है। जब घड़े का निर्माण हो जाता है तब इस अभाव का अन्त हो जाता है। इसलिये प्रागभाव को सान्त माना गया है।
(२) ध्वंसाभाव (posterior Non-existence)-ध्वंसाभाव का अर्थ है विनाश के बाद किसी चीज का अभाव। घड़े के नष्ट हो जाने के बाद टूटे हुए टुकड़ों में घड़े का जो अभाव है वहीं ध्वंसाभाव कहलाता है। ध्वंसाभाव सादि (with a beginning) है। घड़े का नाश होने के बाद उसका ध्वंसाभाव शुरु होता है। परन्तु ध्वंसाभाव का कभी अन्त नहीं हो सकता, क्योंकि जो घड़ा टूट चुका है उसकी उत्पति फिर कभी नहीं होगी इसीलिए ध्वंसाभाव को सादि और अनन्त कहा गया है।
भाव -पदार्थ और अभाव पदार्थ के स्वरूप में हम अन्तर पाते हैं। जिस भाव पदार्थ की उत्पत्ति होती है उसका नाश भी आवश्यक है। परन्तु यह बात अभाव-पदार्थ के प्रसंग में नहीं लागू होती है। जिस अभाव की उत्पत्ति हो गई, उसका नाश असम्भव है । जो मकान टूट चुका है उसकी उत्पति सम्भव नहीं है।

(३) अत्यन्ताभाव (absolute non-existence) -दो वस्तुओं के सम्बन्ध का अभाव जो भूत, वर्तमान और भविष्य में रहता है। अत्यन्ताभाव कहलाता है।
उदाहरणस्वरुप रुप का वायु में अभाव। रुप का वायु में भूतकाल में अभाव था, वर्तमान काल में भी है, भविष्यत काल में भी होगा। अत्यन्ताभाव अनादि और अनन्त कहा जाता है।
प्राचीन नैयायिकों ने सामयिक अभाव (Temporal Non-existence) का विवरण किया है। ऐसा अभाव जो कुछ ही समय के लिए होता है सामयिक अभाव कहा गया है। जैसे अभी हमारी जेब में कलम का न होना सामयिक अभाव है। परन्तु अधिकांश नैयायिक इसे अत्यन्ताभाव से भित्र नहीं मानते हैं। सामयिक अभाव को अत्यन्ताभाव से पृथक् करना भ्रामक है।

दूसरे प्रकार के अभाव को **अन्योन्याभाव** (Mutual Non-existence) कहा जाता है। अन्योन्याभाव का मतलब है दो वस्तुओं की भिन्नता।

इस अभाव का सांकेतिक उदाहरण होगा 'क ख नहीं है'। इस प्रकार जब एक वस्तु का दूसरे वस्तु से भेद बतलाया जाता है तब अन्योन्याभाव का प्रयोग होता है। इस अभाव का उदाहरण होगा 'घोड़ा गाय नहीं है। इसका विपरीत होगा' घोड़ा गाय है। अन्योन्याभाव का विपरीत होगा ऐक्य(Identity)। अत:अन्योन्याभाव ऐक्य का अभाव कहा जा सकता है। यह अभाव अनादि और अनन्त है।

अभाव का वर्गीकरण तालिका द्‌वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

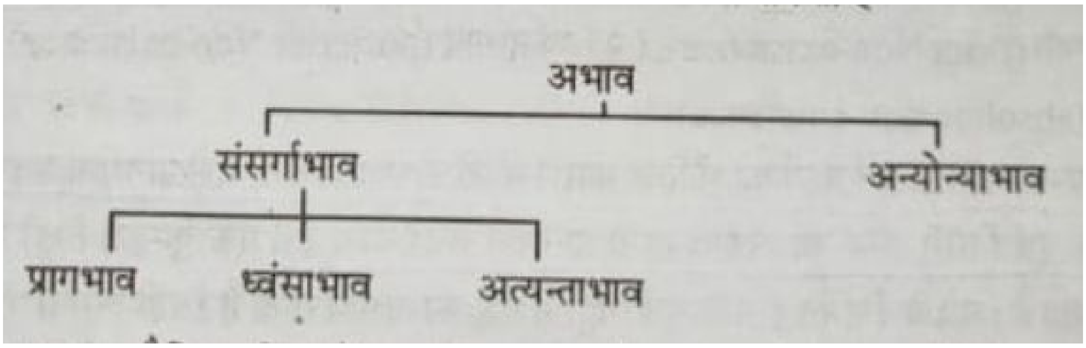

-------(०)-------